ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 270-272

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

भारत में बेरोजगारी की समस्या

डॉ0 जितेन्द्र कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, एस0 एम0 कालेज, चन्दौसी, सम्भल, (उ0प्र0), भारत

Received-19.06.2022, Revised-22.06.2022, Accepted-25.06.2022 E-mail: jitendrakumar70372@gmail.com

सारांशः – ***बेरोजगारी प्रत्येक देश में किसी न किसी रूप में अवश्य पायी जाती है, किन्तु भारत में इस समस्या का रूप आज बहुत अधिक गम्भीर है। यूरोप के देशों में बेकारी का स्वरूप केवल अस्थायी है, क्योंकि वहाँ किसी नयी मशीन के प्रयोग से अथवा अचानक किसी उद्योग के नष्ट हो जाने के कारण से बेकारी ही दशा उत्पन्न होती है, लेकिन भारत में प्राकृतिक साधनों के अपर्याप्त उपयोग और कृषि के परम्परागत प्रकृति के कारण बेकारी ने स्थायी रूप ले लिया है। भारत के सभी वर्गों में बेरोजगारी व्यापक रूप में पायी जाती है।***

कुंजीभूत शब्द– बेरोजगारी,गम्भीर, बेकारी, अस्थायी, प्राकृतिक साधनों, परम्परागत प्रकृति, व्यापक रूप, समस्या।

भारत में बेकारी की समस्या का एक विचित्र रूप शिक्षितों की बेकारी है। शिक्षित व्यक्ति शारीरिक श्रम को अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझते हैं तथा नौकरी को ही अपनी शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य मानते हैं। इसके अलावा अशिक्षित वर्ग में, औद्योगिक श्रमिकों में तथा खेतिहरों में बेरोजगारी की विकट समस्या है। देश में अपूर्ण रोजगार भी बहुत अधिक हैं। स्वर्गीय पं० नेहरू ने संसद में प्रथम परियोजनाओं के वाद–विवाद पर कहा था, भारत में दो प्रकार के बेरोजगार व्यक्ति हैं– एक अपेक्षा. त कम संख्या वाले वर्ग के व्यक्ति और दूसरी बड़ी संख्या वाले वर्ग के व्यक्ति। कम संख्या का वर्ग तो उन व्यक्तियों का है, जो बिल्कुल परिश्रम नहीं करते और न उत्पादन का प्रयत्न करते हैं, बल्कि दूसरों के श्रम पर जीवित रहना चाहते हैं। इनकी आय किराये के रूप में या अन्य किसी प्रकार से होती है। ये व्यक्ति अनुत्पादक तथा बेरोजगार होते हैं। ये ऐसे व्यक्ति हैं, जो समाज में उच्च शिखर पर आसीन हैं। इन्हें कार्य करने की आवश्यकता नहीं, किसी अन्य व्यक्ति इनके लिए पहले ही अन्य किसी समय धन उपार्जन कर चुके हैं। ये उच्च स्तर के बेरोजगार व्यक्ति होते हैं। ये दूसरों से अधिक उपभोग करते हैं, अतः ये समाज पर भार है। दूसरी प्रकार की बेरोजगारी दो श्रेणियों में विभाजित की जा सकती है। बेरोजगारों में से कुछ व्यक्ति आलसी होते हैं, क्योंकि हमारे देश में आलस्य व्यक्ति को दान देकर बढ़ावा दिया जाता है। इसके पश्चात् जिनको सरलता से ऐसा अवसर नहीं मिलता। देश में ऐसे व्यक्तियों की ही बेरोजगारी की वास्तविक समस्या है। देश में विभाजन के पश्चात् तो समस्या और गम्भीर हो गई है। प्रत्येक वर्ष लाखों व्यक्ति तिब्बत, म्यामार, श्रीलंका, इण्डोनेशिया, बांग्लादेश और अन्य देशों से भारत में प्रवेश करके बेकारी की समस्या को अधिक बढ़ा लेते हैं।

भारत में बेरोजगारी का अध्ययन हम दो शीर्षकों के अन्तर्गत कर सकते हैं –

1. ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी
2. नगरीय क्षेत्रों में बेरोजगारी

ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी – भारत एक कृषि प्रधान देश है, जिसमें अधिक से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष रूप से खेती करके जीविका उपार्जित करते हैं। भारतवर्ष में दो प्रकार की बेरोजगारी ग्रामीण क्षेत्र में पाई जाती है।

(अ) मौसमी बेरोजगारी – भारत में लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या खेती पर निर्भर है और कृषि एक मौसमी उद्योग है। इसके अन्तर्गत किसान फसल कट जाने के बाद बेरोजगार हो जाते हैं तथा जब तक दूसरी फसल का कार्यक्रम प्रारम्भ नहीं हो जाता, तब तक बेकार ही रहते हैं। भारत में सिंचाई व पूंजी का अभाव होने के कारण .षि सहायक व अन्य कुटीर उद्योग का पर्याप्त विकास न होने से लोगों को वर्ष भर कार्य नहीं मिल पाता है।

(ब) छिपी हुई बेरोजगारी – भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में छिपी हुई बेरोजगारी भी अत्यन्त व्यापक है। छिपी बेरोजगारी से तात्पर्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिति से है, जिसमें श्रमिक काम पर लगा हुआ मालूम होता है, किन्तु उत्पादन में अंशदान नहीं के बराबर होता है। कृषि क्षेत्र में बहुत–से ऐसे श्रमिक लगे होते हैं, जिन्हें यदि कृषि से हटा दिया जाए तो उत्पादन में कोई कमी नहीं होती है। दूसरे शब्दों में, इन श्रमिकों की सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है। ऐसे श्रमिक आर्थिक दृष्टि से बेरोजगार होते हैं, क्योंकि यह वास्तव में उत्पादन कार्य में नहीं लगे हुए हैं। संक्षेप में छिपी हुई बेरोजगारी की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं – छिपी बेरोजगारी केवल पारिवारिक अर्थव्यवस्थाओं में क्रियाशील होती है।

– जिसमें परिवार के सदस्य ही मिलकर उत्पादन कार्य को सम्पन्न करते हैं, यह बेरोजगारी दृष्टिगत नहीं होती है।

– इस बेरोजगारी में श्रम की सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है।

नगरीय क्षेत्र में बेरोजगारी – नगरीय क्षेत्रों में मुख्य रूप से दो प्रकार की बेरोजगारी देखने को मिलती हैं –

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

(अ) औद्योगिक बेरोजगारी (ब) शिक्षित वर्ग व मध्यम श्रेणी के लोगों में पायी जाने वाले बेरोजगारी।

देश में जनसंख्या की तेजी से वृद्धि के कारण श्रमिकों की संख्या भी बढ़ रही है। नगरों के विस्तार के साथ–साथ ग्रामीणों का पलायन शहरों की ओर हो रहा है। कम कामकाज वाले मौसम में अनेक कृषि श्रमिक रोजगार की तलाश में औद्योगिक केन्द्रों की ओर आते हैं। औद्योगिक विकास की गति बहुत धीमी है। उद्योगों का स्थानीयकरण भी दोषपूर्ण है तथा इस पर निर्भर रहने वाले लाखों भारतीयों को इससे पूर्ण रोजगार नहीं मिलता, क्योंकि कुछ केन्द्रों में बहुत उद्योग स्थापित किए गए हैं वहाँ भीड़–भाड़ बहुत हो गई है। परिणामस्वरूप श्रमिकों को खपाने की क्षमता कम हो गई है। हमारे उद्योगों में उत्पादन की लागत काफी ऊँची है और वे उचित प्रकार से विकसित नहीं हो पाते। कुछ उद्योगों में विवेकीकरण योजनाओं ने भी श्रमिकों को रोजगारविहीन कर दिया है। कुछ उद्योग, जैसे–मशीन उद्योग मौसमी होते हैं और वे पूर्णकालिक रोजगार नहीं दे पाते।

शिक्षित वर्ग में भी बेरोजगारी पाई जाती है। इसका कारण भी स्पष्ट है। हमारी शिक्षा प्रणाली बहुत अधिक साहित्यिक है तथा हमारे स्नातक क्लर्क अथवा साहित्य कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए उपयुक्त नहीं रहते। स्नातकों की भी बड़ी संख्या को खपाना सम्भव नहीं है । अतः शिक्षित वर्ग में भी व्यापक रूप से बेरोजगारी फैली हुई है।

भारत में बेरोजगारी सम्बन्धी मुख्य विशेषताएँ – एन०एस०एस० के 43वें दौर के आधार पर आठवीं योजना प्रलेख ही में भारत में व्याप्त बेरोजगारी सम्बन्धी कुछ मुख्य लक्षणों की ओर संकेत किया गया है। जो इस प्रकार हैं –

1. ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले, शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी अधिक है। 2. पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में बेरोजगारी की दर ऊँची है। 3. पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अल्प रोजगार का अनुपात अधिक है। 4.शिक्षित वर्ग में बेरोजगारी की गहनता अधिक है, जबकि कुल सामान्य स्थिति बेरोजगारी का अनुपात 3.77 है और शिक्षित बेरोजगारी 12 प्रतिशत है। 5. उच्च स्तर की शिक्षा के साथ–साथ बेरोजगारी की दर में भी वृद्धि हो रही है। 6. एक–आध राज्य को छोड़कर अन्य राज्यों में साक्षरता व शिक्षा के स्तर आर्थिक विकास और खुली बेरोजगारी के बीच धनात्मक सह–सम्बन्ध बनता जा रहा है। 7. सन् 1983–88 के दौरान सामान्य रूप से बेरोजगारी बढ़ी है, जबकि सप्ताहिक स्थिति में और दैनिक स्थिति बेरोजगारी में कमी आई है। यह तथ्य इस बात पर संकेत है कि देश में बेरोजगारी के ढाँचे में बदलाव आया है अर्थात् 'अल्प रोजगार, धीरे–धीरे खुली बेरोजगारी का रूप लेता जा रहा है। 8. स्त्रियों में खुली बेरोजगारी ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में बढ़ी है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में इसका प्रभाव दुगुना है रहा है। 9. विकास की धीमी गति। 10. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अभाव। 11. विनियोग का निम्न स्तर। 12. निजी क्षेत्रों की समझ अनिश्चितता व अत्यधिक सरकारी नियंत्रण। 13. शिक्षितों का दृष्टिकोण। 14. व्यवसायिक शिक्षा की धीमी गति। 15. जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि। 16. अत्यधिक यंत्रीकरण एवं मशीनों में सुधार। 17. व्यापार में उतार–चढ़ाव। 18. पूँजी में कमी। 19. शिक्षितों का शारीरिक श्रम के प्रति हीनता की मनोवृत्ति। 20. शिक्षा के सतत् प्रसार के फलस्वरूप शिक्षितों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि। 21. देश में प्रशिक्षण संस्थाओं की अपर्याप्तता। 22. देश में ऐसी संस्थाओं का अभाव, जो शिक्षित लोगों को रोजगारपरक दिशा–निर्देश प्रदान कर सकें। 23. अपर्याप्त औद्योगिक विकास। 24. शरणार्थी समस्या। 25. नागरिकों की गिरती हुई क्रय शक्ति।

भारत में बेरोजगारी के परिणाम – इसके निम्नलिखित परिणाम होते हैं –

1. व्यक्तिगत विघटन। 2. पारिवारिक विघटन। 3. सामाजिक प्रगति में बाधा। 4. निम्न स्वास्थ्य स्तर। 5. मानसिक रोग। 6. नैतिक पतन। 7. अपराधों में वृद्धि। 8. विद्यार्थियों में असन्तोष। 9. राजनीतिक अशांति।10. मानव शक्ति का व्यर्थ जाना। 11. सामाजिक समस्या में वृद्धि।

भारत में बेरोजगारी के कारण – भारत में बेरोजगारी के निम्नलिखित कारण हैं – सामान्य कारण –

1. जनसंख्या में तीव्र वृद्धि 2. नियोजन में दोष 3. आर्थिक विकास की धीमी गति 4. पूँजी प्रधान परियोजनाओं पर जोर।

विशिष्ट कारण – ग्रामीण या अ.श्य बेरोजगारी सम्बन्धी कारण –

1. कृषि में मौसमी प्र.ति 2. बढ़ता हुआ जनभार 3. ग्रामीण क्षेत्र में व्यापक निरक्षरता 4. भारतीय कृषि का वर्षा पर आश्रित रहना 5. पर्याप्त भूमि का परती पड़ा रहना 6. पूँजी का अभाव 7. सामाजिक स्थिति 8. सहायक उद्योग धंधों का अभाव 9. दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति 10. कुटीर उद्योगों का विनाश 11. कृषि की प्राचीन एवं वैज्ञानिक पद्धति 12. भूमि का छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजन 13. प्राकृतिक प्रकोपों के कारण कृषि को हानि 14. कृषि व्यवसाय का अव्यवस्थित एवं असंगठित होना 15. भूमि के प्रति लगाव होने के लाभकारी स्थिति में न छोड़ना।

नगरीय या शिक्षित बेरोजगारी सम्बन्धी कारण –

1. दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली 2. उद्योगों का अपर्याप्त विकास
3. प्रतिकूल उत्पादक तकनीकी का चुनाव 4. बौद्धिक वर्ग का देश से पलायन 5. आर्थिक स्तर पर निर्भरता तथा ऋणग्रस्तता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

6. भिक्षावृत्ति तथा वेश्यावृत्ति में वृद्धि।

भारत में बेरोजगारी दूर करने के उपाय –

1. जनसंख्या विरोध 2. रोजगार कार्यालयों की स्थापना 3. पर्याप्त माँग के स्तर को बनाए रखना 4. नियोजित औद्योगीकरण 5. श्रमिकों की गतिशीलता को प्रोत्साहन 6. शिक्षा में सुधार 7. उद्योग धन्धों और नए कार्यों का विस्तार 8. कृषि क्षेत्र में सुधार 9. सामाजिक सेवाओं का विस्तार 10. सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन 11. कम समय की पालसियाँ 12. सहकारी बैंकों की स्थापना 13. रूढ़िवादिता की समाप्ति।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Economic Reforms Umeployment and Poverty, Meenu Agrawal.
2. Employment and Unemployment in India, Mathew E.T.
3. Population Growth and Unemployment in India, N.R. Prabhakara.
4. Resources and Planning for Economic Development, Bhargava, Archana.
5. Rural Development in India, K.R. Gupta.
6. Social Problem in India, Ahuja, Ram.
7. भारत में सामाजिक समस्यायें, पाण्डेय, तेजस्कर, पाण्डय संगीता Mc Graw Jill Education.

*****